एक कहानी यह भी

- मन्नू भंडारी

1. मन्नू भंडारी के बचपन के बारे में लिखिए।

मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में हुआ, लेकिन उनके यादों का सिलसिला शुरू अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के दो - मंज़िला मकान से शुरू होता है, जिसकी ऊपरी मंज़िल में मन्नू के पिताजी का साम्राज्य था। नीचे मन्नू सब भाई - बहिनों के साथ रहती थीं। मन्नू बचपन में काली और मरियल और काली थी। गोरा रंग मन्नू के पिताजी की कमज़ोरी थी। इसलिए मन्नू के पिता बचपन में मन्नू से दो साल बड़ी सुशीला से हर बात में तुलना करते थे।

बहिन भाई
पाँच बहिनों में से मन्नू सबसे छोटी थी

2. पिताजी के प्रति लेखिका के क्या विचार थे?

लेखिका अपने पिताजी के प्रति विचार व्यक्त करती हैं कि अजमेर से पहले मन्नू के पिता जी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ - साथ वे समाज - सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ - आठ, दस - दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे - ऊँचे ओहदों / पद पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

3. लेखिका बचपन में कौन - कौन से खेल खेलती थी?

Scanned with CamScanner

मन्नू भंडारी अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और पड़ौस के सहेलियों के साथ घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले - सतोलिया, लँगड़ी - टाँग, पकड़म - पकड़ाई, काली-टीलो, ... तो कमरों में गुड्डे - गुड़ियों के ब्याह भी रचाए, पास - पड़ोस की सहेलियों के साथ। भाइयों के साथ गिल्ली - डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया।

4. 'पड़ोस - कल्चर' के बारे में लेखिका क्या कहती है?

लेखिका 'पड़ोस - कल्चर' के बारे में कहती है कि उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज कल की जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने 'पड़ोस - कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

5. शीला अग्रवाल का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा

लेखिका मन्नू भंडारी 1945 में जैसे ही दसवीं पास करके 'फर्स्ट इयर' में आई, हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से उनका परिचय हुआ शीला ने मन्नू के मात्र पढ़ने को, चुनाव करके पढ़ने म बदला ... खुद चुन - चुनकर किताबें दीं ... पढ़ी हुई किताब पर बहसें कीं तो दो साल बीतते - न - बीतते साहित्य की दुनिया शरत - प्रेमचंद से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गई और फिर तो फैलती ही चली गई। शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की

Scanned with CamScanner

चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने समझने का जो सिलसिला मन्नू के पिता जी ने शुरू किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रीय भागीदारी में बदल दिया।

7. एक दकियानूसी मित्र ने मन्नू भंडारी के पिता से क्या कहा?

आज़ाद हिंद फ़ौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। पूरा विद्यार्थी-वर्ग चौपड़ (मुख्य बाज़ार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाज़ी। इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर कहा - "अरे उस मन्नू की तो मत मारी गई है पर भंडारी जी आपको क्या हुआ? ठीक है, आपने लड़कियों को आज़ादी दी, पर देखते आप, जाने कैसे-कैसे उलटे-सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है वह। हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब? कोई मान-मर्यादा, इज्ज़त-आबरू का खयाल भी रह गया है आपको या नहीं?"

8. मन्नू भंडारी की माँ का परिचय दीजिए।

मन्नू की बेपढ़ी लिखी माँ धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशील थी। पिताजी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फ़र्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं। उन्होंने ज़िन्दगी भर अपने लिए

कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं... केवल दिया ही दि

III. ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :-

1. 'एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी'

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश को हमारे पाठ्यपुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत पाठ की लेखिका मन्नू भंडारी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत वाक्य में लेखिका अपने पिता के स्वभाव का परिचय दे रही हैं।

स्पष्टीकरण :- 2 Ans

2. 'पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ'

स्पष्टीकरण :- 8 Ans

3. 'यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी।'

स्पष्टीकरण :- एक बार लेखिका की कॉलिज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें और बताएँ कि मन्नू की गतिविधियों के कारण मन्नू के खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए। पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला हो गए। इस संदर्भ में मन्नू के पिता जी कहते हैं कि - "यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी।"

4. 'वे बोलते जा रहे थे और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा

रहा था।

स्पष्टीकरण :- अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल जी बड़ी गर्मजोशी से मंच का स्वागत किया और कहा "मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा मंडारी जी को बधाई देने चला आया। आई एम रिअली प्राउड ऑफ़ यू... क्या तुम घर में घुसे रहते हो मंडारी जी... घर से निकला भी करो। यू हैव मिस्ड समथिंग", और वे धुँआधार तारीफ़ करने लगे - वे बोलते जा रहे थे और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था।

Scanned with CamScanner